

# अमृत विचार

कानपुर नगर

एक सम्पूर्ण अखबार



ગुजરात में बाइंस से नौकी की मौत, कई इलाकों में बाढ़

16

पुष्टि 2 द रुल का नया पं

## हर मौसम में हो सकता मशरूम का उत्पादन

त

व

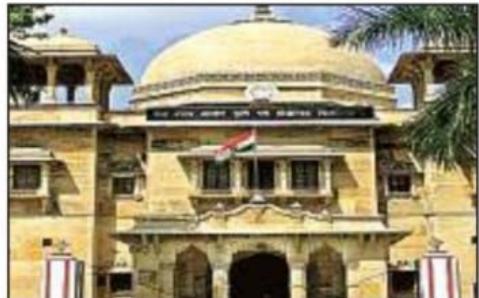
ि

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

**अमृत विचार।** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) की ओर से कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर में किसानों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान किसानों को मशरूम की खेती के टिप्प दिए गए। विशेषज्ञों ने कहा कि इसकी खेती कम जगह, कम लागत पर बेहतर लाभ देती है। अब हर मौसम में मशरूम का उत्पादन हो सकता है।

प्रशिक्षण के दौरान वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने किसानों से कहा कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्य होते हैं। यही वजह है कि देश व विदेश में मशरूम की मांग काफी बढ़ गई है। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न-भिन्न क्रह्नुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के

- सीएसए विवि की ओर से किसानों को दिया गया प्रशिक्षण



क्रम में हेर-फेर करके किसान पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे। गर्भियों में तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पाते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम के एक-दो फसलों लेने का प्रयास करते हैं। यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं।



मौसम  
अधिकतम तापमान  
33°C  
27°C  
न्यूनतम तापमान

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

ગાજર

સોના 73.840g  
ચાંદી 87.000kg

સેંસેક્સ  
81,053.19

04

સંકટ કે દૌર સે ગુજરતી ભાજાયા, અબ વિપક્ષ કે ઝુટે-સંચે વિર્મશી પર સત્તાપક દેતા હૈ પ્રતિક્રિયા ઔર સફાઈ

વર્ષ: 10

અંક: 207

લખનऊ સે પ્રકાશિત

લખનऊ, ગુરુવાર 29 અગસ્ટ 2024

પૃષ્ઠ: 08

જનતા કી આવાજ

સ્ત્રી 2 કે બાદ ઇન ફિલ્મોને જલવાફ

# યૂપી મૈસેંજર

## કૃષિવિજ્ઞાન કેંદ્ર ને કરાયા મશરૂમ ઉત્પાદન તકનીકી પ્રશિક્ષણ

યૂપી મૈસેંજર સંવાદાતા

કાનપુર, સીએસએ કે અધીન સંચાલિત કૃષિ વિજ્ઞાન કેંદ્ર દિલીપ નગર કી ગૃહ વૈજ્ઞાનિક ડૉક્ટર નિમિષા અવસ્થી ને બતાયા કી મશરૂમ કા ઉપયોગ ભોજન વ ઔષધિ કે રૂપ મેં કિયા જાતા હૈ। પ્રોટીન, કાબોર્હાઇડ્રેટ, ખનિજ લવણ ઔર વિટામિન જૈસે ઉચ્ચ સ્તરીય ખાદ્ય મૂલ્યોને કારણ મશરૂમ સમૂહિત વિશ્વમાં અપના એક વિશેષ મહત્વ રખતા હૈ। કુછ વર્ષોને કિસાનોનું કા રૂઝાન મશરૂમ કી ખેતી કી તરફ તેજી સે બઢા હૈ, મશરૂમ કી ખેતી બેહતર આમદની કા જરિયા બન સકતી હૈ। અલગ-અલગ રાજ્યોનું કિસાન મશરૂમ કી ખેતી સે અચ્છા મુનાફા કરી રહે હૈનું, કમ જગહ ઔર કમ સમય કે સાથી હી ઇસકી ખેતી મેં લાગત ભી બહુત કમ લાગતી હૈ, જબકી મુનાફા લાગત સે કર્દી ગુના જ્યાદા મિલ જાતા હૈ। ઇસી ક્રમ મેં આજ 28 અગસ્ટ કે કૃષિ વિજ્ઞાન કેંદ્ર દિલીપ નગર, કાનપુર દેહાત દ્વારા દો દિવસીય પ્રશિક્ષણ કા શુભારંભ ગ્રામ ગોપાલ નગર વિકાસ ખંડ રસૂલાબાદ મેં કિયા ગયો કાર્યક્રમ મેં બોલતે હુએ ગૃહ વૈજ્ઞાનિક ડૉ નિમિષા અવસ્થી ને કહા કી જિસ પ્રકાર વિભિન્ન કૃષિ ફસલોનું કો મૌસમ કી અનુકૂલતા કે અનુસાર ભિન્ન-ભિન્ન ઋતુઓનું મેં ઉગાયા જાતા હૈ। ઉસી પ્રકાર વિભિન્ન પ્રકાર કી મશરૂમ કી પ્રજાતિઓનું કે ક્રમ મેં હેર-ફેર કરકે કિસાન ભાઈ પૂરે વર્ષ મશરૂમ ઉત્પાદન કર સકતે હૈનું। ઉત્તર ભારત મેં મૌસમી મશરૂમ ઉત્પાદક પહલે કેવળ શ્વેત બટન મશરૂમ કી એક ફસલ લેને કે બાદ અપને ઉત્પાદન કાર્ય કો બંદ કર દેતે થે તથા ગર્મિયોનું મેં તાપમાન મેં વૃદ્ધિ કે કારણ વર્ષ



ભર મશરૂમ ઉત્પાદન કાર્ય જારી નહીં રખ પતે હૈનું। કુછ મશરૂમ ઉત્પાદક ઢીંગરી મશરૂમ કે એક ઝાડો ફસલોને લેને કા પ્રયાસ કરતે હૈનું। યદિ મશરૂમ ઉત્પાદક દૂધિયા મશરૂમ કો વર્તમાન ફસલ ચક્ર મેં શામિલ કર લેં તો અપને મશરૂમ ઉત્પાદન કાલ કો બઢા સકતે હૈનું તથા વર્ષ ભર મશરૂમ ઉત્પાદન કરકે સ્વરોજગાર પ્રાપ્ત કર સકતે હૈનું। ડૉ ખલીલ ખાન ને બતાયા ઉત્તર ભારત કે મૈદાની ભાગોનું શ્વેત બટન મશરૂમ કો શરદ ઋતુ મેં અક્ટૂબર સે ફરવરી તક, ગ્રીષ્મકાલીન શ્વેત બટન મશરૂમ કો સિતંબર સે નવંબર વફરવરી સે અપ્રૈલ તક ઢીંગરી કા ઉત્પાદન કિયા જા સકતા હૈ કાર્યક્રમ કો આગે બઢાતે હુએ ડૉ રાજેશ રાય ને કહા ભારત જૈસે વિકાસ શીલ દેશ કી પોષણ સુરક્ષા હેતુ દૈનિક આહાર મેં મશરૂમ કો સમ્મિલિત કરના અતિ આવશ્યક હૈ। કાર્યક્રમ મેં સહયોગી ગ્રામ વિકાસ સંસ્થાન કે બદન સિંહ, કે સાથ ગોપાલપુર કે 35 સે અધિક મહિલા પુરુષ કૃષકોનું ને પ્રતિભાગ કિયો કાર્યક્રમ મેં ઢિંગરી મશરૂમ ઉત્પાદન કા વિધિ પ્રદર્શન ભી કિયા ગયો શુભમ યાદવ ને સહયોગ કિયા



# सत्य का असर समाचार पत्र

29th August 2024

Mobile no 9956834016

सत्य का असर समाचार पत्र **पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल**

## कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा कूराया मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रशंक्षण



चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रीटीयोगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र

दिलीप नगर की गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी ने बताया कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है। प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्यों के कारण मशरूम सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशेष महत्व रखता है। कुछ वर्षों में किसानों का रुझान मशरूम की खेती की तरफ तेजी से बढ़ा है, मशरूम की खेती बेहतर आमदनी का जरिया बन सकती है। अलग-अलग राज्यों में किसान मशरूम की खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं, कम जगह और कम समय के साथ ही इसकी खेती में लागत भी बहुत कम लगती है, जबकि मुनाफा लागत से कई गुना ज्यादा मिल जाता है। इसी क्रम में आज 28 अगस्त को कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ ग्राम गोपाल नगर विकासखंड रसूलाबाद में किया गया। कार्यक्रम में बोलते हुए गृह वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न - भिन्न त्रृतुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के क्रम में हेर - केर करके किसान भाई पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे तथा गर्मियों में तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी में मशरूम के एक - दो फसलें लेने का प्रयास करते हैं। यदि मशरूम उत्पादक दृष्टिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं तथा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ खलील खान ने बताया उत्तर भारत के मैदानी भागों में श्वेत बटन मशरूम को शरद त्रृतु में अक्टूबर से फरवरी तक, ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन मशरूम को सितंबर से नवंबर व फरवरी से अप्रैल तक ढींगरी का उत्पादन किया जा सकता है। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ राजेश राय ने कहा भारत जैसे विकासशील देश की पोषण सुरक्षा हेतु दैनिक आहार में मशरूम को सम्मिलित करना अति आवश्यक है। कार्यक्रम में सहयोगी ग्राम विकास संस्थान के बदन सिंह, के साथ गोपालपुर के 35 से अधिक महिला पुरुष कृषकों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में ढिंगरी मशरूम उत्पादन का विधि प्रदर्शन भी किया गया। शुभम यादव ने सहयोग किया।

प्रदेश के कृषि विज्ञान केंद्रों एवं कृषि संस्थाओं में होगा वृक्षारोपण महाअभियान



IARI परिसर, पूसा, नई दिल्ली में शुरू होगा। देश में डीए पैड एफडब्ल्यू, आईसीएआर संस्थानों, सीएयू, केवीके और एसएयू के सभी अधीनस्थ कार्यालयों को भी उसी दिन और समय पर अपने-अपने स्थानों पर इसी तरह का वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए सूचित किया जाता है। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के तहत 800 से अधिक संस्थानों के भाग लेने की उम्मीद है जहाँ आयोजन के दौरान 3000-4000 पौधे लगाए जाएं। एक पैड माँ के नाम लॉन्च किया। उन्होंने बताया कि वैश्विक अभियान के रूप में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने बताया कि प्रयास किए जा रहे हैं कि सितंबर 2024 तक देश भर में 80 करोड़ पौधे और मार्च 2025 तक 140 करोड़ पौधे लगाए जाएं। डा. दुबे ने बताया कि उत्तर प्रदेश में 89 कृषि विज्ञान केंद्र संचालित हैं। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने 20 जून, 2024 को असोला भाटी वन्यजीव अभ्यारण में वृक्षारोपण गतिविधि शुरू की। जिसमें व्यक्तियों ने अपनी माताओं के सम्मान में पैड लगाए। अभियान के एक भाग के रूप में, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय 29 अगस्त 2024 को मा. कृषि मंत्री, भारत सरकार की गरिमामय उपस्थिति में \*एक पैड माँ के नाम\* अभियान का आयोजन कर रहा है। कार्यक्रम के तहत, मंत्रालय आईसीएआई परिसर में लगभग 1 एकड़ भूमि में "मानू वन" स्थापित करेगा जहाँ कृषि मंत्री और मंत्रालय के अधिकारी/कर्मचारी पौधे लगाएं। वृक्षारोपण कार्यक्रम 29 अगस्त 2024 को सुबह 10:00 बजे

गांव  
1.34 | सूर्योदय  
05.12

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष: 16 अंक : 59 कानपुर, गुरुवार 29 अगस्त 2024

नगर संस्करण

पृष्ठ 12

मूल्य: 2.00 रुपए

प्रेसक्रम  
1.0 | न्यूनतम  
15.0

गा. र 62,710

प्री. र 78,500

# राष्ट्रीय स्वरूप

नामजूप रहा।

## कृषि विज्ञान केंद्र ने कराया मशरूम उत्पादन तकनीकी प्रशिक्षण

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी ने बताया कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्यों के कारण मशरूम सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशेष महत्व रखता है। कुछ वर्षों में किसानों का रुझान मशरूम की खेती की तरफ तेजी से बढ़ा है, मशरूम की खेती बेहतर आमदनी का जरिया बन सकती है। अलग-अलग राज्यों में किसान मशरूम की खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं, कम जगह और कम समय के साथ ही इसकी खेती में लागत भी बहुत कम लगती है, जबकि मुनाफा लागत से कई गुना ज्यादा मिल जाता है। इसी क्रम में आज 28 अगस्त को कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ ग्राम गोपाल नगर विकासखंड रसूलाबाद में किया गया। कार्यक्रम में बोलते हुए गृह वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न-भिन्न त्रिभुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के क्रम में हेर-फेर करके किसान भाई पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर-

सकते हैं। उत्तरी भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे तथा गर्मियों में

शरद ऋतु में अक्टूबर से फरवरी तक, ग्रीष्मकालीन श्वेत बटन मशरूम को सितंबर से नवंबर व फरवरी से अप्रैल तक ढींगरी का उत्पादन किया जा सकता है।



तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम के एकहृदो फसलें लेने का प्रयास करते हैं। यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं तथा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ खलील खान ने बताया उत्तर भारत के मैदानी भागों में श्वेत बटन मशरूम को

कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए डॉ राजेश राय ने कहा भारत जैसे विकासशील देश की पोषण सुरक्षा हेतु दैनिक आहार में मशरूम को सम्मिलित करना अति आवश्यक है। कार्यक्रम में सहयोगी ग्राम विकास संस्थान के बदन सिंह, के साथ गोपालपुर के 35 से अधिक महिला पुरुष कृषकों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में ढींगरी मशरूम उत्पादन का विधि प्रदर्शन भी किया गया। शुभम यादव ने सहयोग किया।



# अमर भारती

संस्करण

पृष्ठा: 03 रु.

RNI No. UPHIN/2011/46455

एक उम्मीद

[www.amarbharti.com](http://www.amarbharti.com)

गुरुवार, 29 अगस्त 2024 शक सम्वत् 1946, वे

## कृषि विज्ञान केंद्र ने कराया मशरूम उत्पादन प्रशिक्षण

कानपुर (अमर भारती)। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की गृह वैज्ञानिक डॉक्टर निमिषा अवस्थी ने बताया कि मशरूम का उपयोग भोजन व औषधि के रूप में किया जाता है। प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खनिज लवण और विटामिन जैसे उच्च स्तरीय खाद्य मूल्यों के कारण मशरूम सम्पूर्ण विश्व में अपना एक विशेष महत्व रखता है। कुछ वर्षों में किसानों का रुझान मशरूम की खेती की तरफ तेजी से बढ़ा है, मशरूम की खेती बेहतर आमदनी का जरिया बन सकती है। अलग-अलग राज्यों में किसान मशरूम की खेती से अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं, कम जगह और

कम समय के साथ ही इसकी खेती में लागत भी बहुत कम लगती है, जबकि मुनाफा लागत से कई गुना ज्यादा मिल जाता है। इसी ऋम में आज 28 अगस्त को कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर, कानपुर देहात द्वारा दो दिवसीय प्रशिक्षण का शुभारंभ ग्राम गोपाल नगर विकासखंड रसूलाबाद में किया गया। कार्यक्रम में बौलते हुए गृह वैज्ञानिक डॉ निमिषा अवस्थी ने कहा कि जिस प्रकार विभिन्न कृषि फसलों को मौसम की अनुकूलता के अनुसार भिन्न-भिन्न ऋतुओं में उगाया जाता है। उसी प्रकार विभिन्न प्रकार की मशरूम की प्रजातियों के ऋम में हेर-फेर करके किसान भाईं पूरे वर्ष मशरूम उत्पादन कर सकते हैं। उत्तरी

भारत में मौसमी मशरूम उत्पादक पहले केवल श्वेत बटन मशरूम की एक फसल लेने के बाद अपने उत्पादन कार्य को बंद कर देते थे तथा गर्मियों में तापमान में वृद्धि के कारण वर्ष भर मशरूम उत्पादन कार्य जारी नहीं रख पते हैं। कुछ मशरूम उत्पादक ढींगरी मशरूम के एक-दो फसलें लेने का प्रयास करते हैं। यदि मशरूम उत्पादक दूधिया मशरूम को वर्तमान फसल चक्र में शामिल कर लें तो अपने मशरूम उत्पादन काल को बढ़ा सकते हैं तथा वर्ष भर मशरूम उत्पादन करके स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। डॉ खलील खान ने बताया उत्तर भारत के मैदानी भागों में श्वेत बटन मशरूम को शरद ऋतु